International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 10-09-2019; Accepted: 13-10-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 6; November 2019; Page No. 28-29

तुलसी की गीतावली में लोक परम्पराओं का विवेचन

हरिश्चन्द्र [1], डॉ0 श्यामसनेही लाल शर्मा [2]
[1] शोधार्थी हिन्दी, हिन्दी–विभाग कुसुम बाई जैन कन्या महाविद्यालय भिण्ड, भारत।
[2] प्राध्यापक, हिन्दी–विभाग कुसुम बाई जैन कन्या महाविद्यालय भिण्ड, भारत।

प्रस्तावना

हिन्दी भक्तिकालीन रामकाव्य परम्परा के महानतम कवि गोस्वामी तुलसीदास जी हिन्दू संस्कृति के पोषाक थे, उन्हें हिन्दू परम्पराओं और रीति–रिवाजों का पूर्ण ज्ञान था जिसका उन्होंने रामचरित मानस एवं गीतावली आदि रचनाओं में किया है। उन्हें लोक परम्पराओं का पूर्ण ज्ञान था, उन्होंने मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक की सभी लोक परम्पराओं का वर्णन अपनी रचनाओं में किया है। ये लोक परम्पराऍं आज भी हमारे समाज में प्रचलित हैं।

'लोक' वौद्धिक चेतना, सुसंस्कृत एवं परिष्कृत रुचि वालों से इतर – अभिजात संस्कार एवं शिक्षा से हीन एक ऐसा समुदाय है जो आदिम प्रवृत्तियों एवं परम्पराओं की धारा में बहता हुआ अकृत्रिम जीवन जीने में विश्वास रखता है। ऐसे लोक की अभिव्यक्ति जिन तत्त्वों के माध्यम से होती है, वे लोक परम्पराऍं हैं।[1]

लोक परम्पराऍं अक्षय वार्ता की निधि हैं। लोक वार्ता के अन्तर्गत आचार–विचार की वह समस्त सम्पत्ति आ जाती है, जिसमें मानव का परम्परित रूप प्रत्यक्ष हो उठता है और जिसके स्रोत लोक मानस होते हैं, वे लोक–मानस जिनमें परिमार्जन या संस्कार की चेतना काम नहीं करती होती। [2]

गोस्वामी तुलसीदास जी की अन्यत्तम रचना गीतावली में कई लोक परम्पराओं का निर्वाह किया गया है, जिनका सम्बन्ध शकुनों–अपशकुनों, भविष्यवाणियों मंत्र–तत्र, जादू टोनो आदि से है। गीतावली में राजा दशरथ को रामादि पुत्रों की प्राप्ति में विधाता की अनुकूलता तथा देवता और गुरू के आशीर्वाद को हेतु माना गया है। अतः इनके पजून–अर्चन का जो विधान है उसके मूल में देवता की फलदायक शाक्ति में विश्वास और गुरू के आशीर्वाद में आस्था ही है। इसी विश्वास और आस्था के चलते लोक इन्हें पूजता आ रहा है। आज भी यही लोक–परम्परा बनी हुई है। गीतावली में भी इस परम्परा का निर्वाह हुआ है। वहॉ भी किसी भी मंगल कार्य का आरम्भ देव–पूजन से ही किया गया प्रदर्शित है–

''गनप गौरी–हर पूजिकै गोवृन्द दुहाए। [3]

गीतावली के वृत्त में मानवेत्तर पात्रों–देवता, राक्षस, पशु–पक्षी के विधान और विविध भूमिकाओं में उनकी नियोजना निर्विवाद रूप से लोक मानस की देन है। लोक प्रवृत्ति बिना किसी विवेचना के जहॉ –तहॉ से जो कुछ मिलता है, उसे संग्रह करती रहती है और उसमें यदि उसकी निष्ठा हुई तो उसे सुरक्षित रखकर उसकी एक परम्परा बनाती जाती है। साहित्य उसी लोक–परम्परा का संवाहक है। विविध देवी–देवता, गंधर्व, अप्सरा, किन्नर, भूत–प्रेत, पशु–पक्षी आदि की जो परम्परा पहले लोक और पुनः साहित्य ने दी उसी का प्रतिफल गोस्वामी जी की गीतावली में देखने को मिलता है। उनकी इस रचना में उस साहित्यिक परम्परा का स्वरूप लोक–प्रवृत्ति के अनुरूप ढलता रहा है। राम जन्म के अवसर पर देवी देवताओं की विविध रूपों में उपस्थिति परम्परा से प्राप्त लोक प्रवृत्ति की सूचक है। कहीं देवता दुंदुभी बजाते हैं, गाते है, हर्षित होते है, पुष्प वर्षण करते है, तो कहीं महाराज दशरथ जातकर्म संस्कार कर पितृगण और देवताओं की पूजा करते हैं। ये सभी अति मानवीय, अलौकिक, दिव्य तत्त्व लोक मानस की देन है और लोक परम्परा से तुलसी के पूर्व और पश्चात् के साहित्य को प्राप्त है।

राजा दशरथ की रानियों के भाग्य की सराहना तो पार्वती, लक्ष्मी और ब्रम्हाणी भी आदरपूर्वक करती है उन्हें आशीर्वाद दे रही हैं। बड़े– बड़े देवता और नागगण महाराज के सौभाग्य की प्रशंसा करते हुए प्रसन्न हो रहे हैं। यही नहीं सुन्दरी के रूप में लक्ष्मी और सखी के रूप में अणिमादि सिद्धियॉ उनकी परिचर्या करती हैं। अणिमादि सिद्धियॉ–शारदा और पार्वती उन रामादि बालकों का लालन–पालन करती हैं। लोकपाल अपने लोकों को भूल गये है– ये सभी अलौकिकताऍं गीतावली को लोक परम्परा से ही प्राप्त है। वेदों से लेकर रामायण, महाभारत, पुराण, संस्कृत साहित्य तथा अन्यान्य भाषाओं के साथ ही अभिजात एवं लोक साहित्य इन लोकवार्ता के तत्त्वों से भरे पड़े है, जिनका अध्ययन कथानक रूढ़ियों अथवा साहित्यिक अभिप्राय के रूप में पृथक् से किया जा सकता है। यहॉ निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि गीतावली में मानवेत्तर तत्त्वों की विविध भूमिकाओं में नियोजना लोक–परम्परा की देन है। इसी के अन्तर्गत शुक–सारिका–संवाद[4] मुद्रिका–सीता–संवाद, वानरों की भूमिका, जटायु का आत्मोसर्ग, आनन्द निद्रा का संभाशण, क्षेमकरी की मंगलमयी क्रिया आदि ऐसे तत्त्व है जो कथानक रूढ़ियों के रूप में पूर्ववर्ती विशाल साहित्य में भरे पड़े हुए है तथा जो परम्परा से गीतावली को प्राप्त है, जिनका प्रयोग कवि ने किया है।

'गीतावली' में प्राप्त अन्य लोक–परम्परानुमोदित तत्त्वों में प्रतिमा–पूजा, नदी पूजा, वृक्ष पूजा आदि हमारी धार्मिक आस्था से जुड़ी हैं। ये लोक–भावना की प्रतीक भी हैं। सदियों से इनकी पूजा लोक करता आया है क्योंकि उसकी मान्यता है कि ऐसा करने में व्यक्ति का मानव– जाति का और लोक का हित सन्निहित है। शाप और वरदान, ज्योतिष विद्या और भविष्यवाणी के अतिरिक्त ष्षकुन–अपशकुन अंग–स्पन्दन, पक्षियों की वार्ता, मुद्रिका का

संभाषण भाग्यवाद, तन्त्र–मंत्र आदि अनेक ऐसे लोक तत्त्व हैं जो लोकवार्ता के अंग है तथा लोक परम्परा से अभिजात साहित्य को प्राप्त है।

संन्दर्भ सूची

1. महाकवि भवभूति के नाटकों में लोकतत्त्व (आलेख)
2. डॉ0 श्यामसनेही लाल ष्शर्मा, ''मरुभारती'' वर्ष –46, अंक–4, जनवरी, 99 पृ–19
3. महाकवि भवभूति के नाटकों में लोकतत्त्व (आलेख) डॉ0 ष्श्यामसनेही लाल शर्मा, ''मरुभारती'' वर्ष –46, अंक–4, जनवरी, 99 पृ–19
4. गीतावली, (बाल0) 6/4
5. गीतावली, (अयोध्या) पद–66–67